विश्व बुजुर्ग दिवस 01 अक्टूबर, 2024 के मौक़े पर खास पेशकश

जब खुद की खुशी से अधिक परायों की खुशियों के माईने ज़ियादा हों, तब धीमी रफ्तार से जी रही जिंदगियों से जुड़ा रिश्ता क्या कहलाता है?

(सुरेंद्र वर्मा, जरीनाज़ अंसारी)

ये मध्यम वर्ग का जो आदमी दिखता है चमकीला, मुझे मालूम है, नहीं है इनके कोट के पीछे अस्तर। नामचीन एक गज़लकार की यह तक़रीर अंजाने, पराए, अनाथ और लावारिस बुजुर्गो के रहनुमा श्री श्यामसुंदर तिवारी की शख्सियत पर कितना माकूल उतरता है इसका अंदाजा इनके सरपरस्ती में रह–जी रहे बुजुर्गो के मुंह में एक–एक कौर, एक–एक निवालों को खा लेने की मिन्नतों और नहलाने–धुलाने जैसी खिदमतों का अहसास रू–ब–रू देखने के बाद ही लगाया जा सकता है। अपने इस जीवंत मिसाल के जरिये श्यामसुंदर तिवारी अपने स्वयंसेवी साथियों सतपाल जी, रेखा आहूजा, राजेश खरे, महाबीर बरगाह, सपन मार्टिन, नम्रता तिवारी, मधु शुक्ला और अरूणिमा मिश्रा, संदीप शर्मा, गोविंद साहू जैसे गिनती के फौजियों के साथ हालिया वक्त, समाज और व्यवस्थाओं के परे इसी समाज परिवार में कतरा–कतरा जी रहे बुजुर्गो के खलनायकों से सेवाभावी मुठभेड़ कर मौके बेमौके में उन्हें बेनकाब करते नजर भी आते हैं, भले ऐसे एहसानफरामोश सगे बेटे–बेटियों ही क्यूँ ना हों। एक तरफ ऐसे तथाकथित रहनुमा जो बुजुर्गो को वहां उजाला दिखाने की बात करते हैं, जहां घनघोर अंधेरा होता है दूसरी तरफ वे जो बिलकुल ही फिकरमंद नहीं वो कहते हैं कि वो पहरा दे रहे हैं जबकि असल में वे गहरी और आरामदायक नींद ले रहे हैं। स्वर्गीय श्री अमरनाथ तिवारी एवं हालिया बीमार पड़ी मॉ महादेवी तिवारी के बेटे श्यामसुंदर का बुजुर्गो की सेवा–सुश्रुआ का जज्बा और जज्बात का यह सफर साल 2005 से 2009 के बीच से शुरू हो जाता है जब ये मास्टर डिग्री लेने के बाद जामिया मीलिया यूनिवर्सिटी से स्वयंसेवी संस्थाओं के मैनेजमेंट की पढ़ाई कर रहे थे तभी श्री अरविंद केजरीवाल के एनजीओ परिवर्तन के अलावा दीगर एनजीओ के क्रियाकलापों के प्रैक्टिल स्टडी के वास्ते सेवादान के दौरान ही इन्होनें बुजुर्गो के दयनीय हालातों और कंकाल बने देह की तकलीफों का मॅजर देखा भोगा है। बिलासपुर के जोरापारा सरकंडा के एक किराए के मकान में संचालित सुवाणी वृद्धाश्रम में रह रहे 15 बूढ़े और 05 बुढ़ियों का संसार जरूरती बुनियादी सुख–सुविधाओं को सहेजने और देने में श्री तिवारी और उनके फौजियों ने हालॉकि कोई कसर नहीं रख छोड़ी है, लेकिन अपनों के दिए घाव इनके देहों से झांक रहीं पसलियों गिने जरूर जा सकते हैं। ये लेटे रहते हैं और सुबह हो जाती है, ये लेटे रहते हैं और शाम हो जाती है, ये लेटे रहते हैं और रात हो जाती है। इसी क्रम से जीने के भ्रम में ये जी भी रहे हैं और तिल–तिल मर भी रहे हैं। मरने के बाद की धधकती आग की ज्वाला के बुझने का भी इनका कोई अपना गवाह नहीं बनता अलबत्ता मरने के पहले इनकी ऑखों में एक अदालत दिखती है जैसे कोई वकील इनके भीतर जिरह कर रहा हो और इन सबको उनके सवालों का अनुमान ही नही तो जाहिर है कि जवाब भी कैसे मालूम हो? कुछ तो मर कर चलीं गई और जो अभी धीमा रफतार से चल रहीं सॉसे गिन रहीं है, में से कुछ बुजुर्ग स्त्रियॉ जो लिखती रहीं होंगी कभी रंग–बिरंगे रेशम से गुड नाइट तकियों पर पर आज उन्हीं तकियों पर मुँह गड़ा कर सिसक–सिसक कर गुज़ार रहीं हैं सारी रात सारी रातें। बहरहाल सुवाणी की बसी हुई इस दुनियॉ में रह रहे 82 साल के श्री सुदेशमणी स्थानीय सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज से रिटायर हुए हैं और अपनी पत्नी ललिता के साथ ही गुजरबसर कर रहे है। वजह पूछने पर बताते हैं कि उनकी दो बेटियॉ हुई जिसमें एक की मृत्यु हो गई और दूसरी बेटी ने रिटायर के बाद मिले रूपयों को एटीम से निकाल निकाल कर हड़पीं भी पिता की खरीदी जमीन को अपने नाम करवा कर आए दिन जुलुम ढातीं भी रहीं। चरमसीमा पर प्रताड़ित होने पर दवा लेने के बहाने ले–दे कर कलेक्टर के पास पहुंचे और इच्छा मृत्यु के लिए आवेदन पत्र भी लिख कर दे डाले। अंततः कलेक्टर साहब की मेहरबानी से इस दंपत्ति को सुवाणी में एक कमरा मुहैया कराया गया तब से वे रह रहे हैं और बेटी के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़कर फर्जी दस्तखत से हुई रजिस्ट्री निरस्त कराने में भी कामयाब हुए हैं। अब इनकी मॅशा इस जमीन को सुवाणी के नाम करने की है लेकिन बेटी अभी रोड़ा इसलिए बनी हुई है कि इनकी मौत के बाद जमीन का मालिकाना हक मिल ही जायेगा। हालॉकि सुदेशमणी को 45 हजार रूपयों की पेंशन भी मिलती है, बावजूद इस रकम से इन्होंने अपने अन्य बुजुर्गों के खानपान लिए भोज सामग्री का अनुदान देने में आज तक उदारमना नहीं हो पाए। खानपान अभी भी वे आश्रम के भंडारे से ही लेते हैं। पास में ही बैठे 62 साल के अमरदीप के ऑखों में रोशनी नहीं हैं बलिया के रहने वाले हैं अभी हाल में ही मेकाहारा में इलाज के लिए ले जाये गये थे इक्जामिन के बाद इन्हें केंसर से ग्रसित होना डिक्लेयर किया गया है। अभी हाल में ही परलोक सिधारे बलौदाबाजार के लालवानी जी के बारे में बताया गया कि उनकी पत्नी और दो बेटियॉ होने के बाद भी ये रखाये गये थे इन्हें पैरालाईज्ड हुआ था मृत्यृ के अंतिम पलों तक अपनी पत्नी को याद कर बिलख रहे थे बहुत कोशिश के बाद वीडियो फोन से संपर्क हुआ पत्नी को देखकर रोए भी बहुत लेकिन पत्नी नहीं आई अंततः वे मर गए अंतिम संस्कार तिवारी जी के द्वारा किया गया। दस दिन के बाद पत्नी ने फोन कर लालवानी जी के डेथ सर्टिफिकेट मॉगी ताकि क्लेम आदि का भुगतान लिया जा सके। मणिपुर के मिंज नाम व्यक्ति को उनके दुबई के पुत्र ने भी इसी आश्रम में छोड़कर गए थे मिंज की पत्नी भी दुबई चली गई जबकि मिंज के रिश्तेदार महिला यहीं शहर के 27 खोली मुहल्ले में रहती हैं बुलाने पर भी नहीं आईं अंततः 2023 में भी इनकी मृत्यु हो गई। अभी हाल में ही कल्याण कुंज से एक व्यक्ति को आश्रम में दाखिल कराया गया इनकी रीढ़ की हड्डी चाटिल अवस्था में है उठ बैठ नहीं सकते हैं दो बेटे हैं पर नाम के हैं। सबसे सिरहन वाले वाक्यात तो स्थानीय राम लाईफ पॉश कॉलोनी के राजा भट्टाचार्य की मॉ की है। राजा साहब खुद किसी बड़ी संस्थान से रिटायर हुए हैं, उनकी पत्नी प्रोफेसर है, बेटा हैदराबाद में है इन्होने गुपचुप तरीके से अपनी मॉ को आश्रम में छोड़ गये रहे। पॉच–छः माह के बाद बंगाली समाज को मॉ के आश्रम में छोड़ने की बात उजागर हुई तो दो दर्जन से अधिक बंगाली परिवार के सदस्य आश्रम पहुंच कर अपनी जेठी की सेवा सुश्रुआ करने लगे तथा राजा पर मॉ को घर ले जाने का दबाव बनाने लगे । बीमार बुजुर्ग मॉ बार बार गुहार लगा रही थी घर मत भेजें उसे मार डालेगे लेकिन बंगाली समुदाय के आक्रोश को देखते हुए राजा अपनी मॉ को ले गये और 15 दिनों बाद मॉ की मृत्यु की खबर आ गई। 2020 से अब तक इस आश्रम में रह रहे 10 से अधिक बुजुर्गो की मौत पर विधिवत अंतिम संस्कार किये जाने की स्वीकारोक्ति तिवारी जी द्वारा की गई। पूरी बातचीत से जाहिर है खुद को आम इंसान होने के बजाय इंसानियत से लबालब बुजुर्गो की सेवा कार्य में स्वयं को समर्पित कर अपने स्वर्गीय पिता के नाम को अमरत्व प्रदान किया है तभी तो सवाल है जब खुद की खुशी से अधिक परायों की खुशियॉ के माईने ज़ियादा हों, तब धीमी रफ्तार से जी रही जिंदगियों से जुड़ा रिश्ता क्या कहलाता है? सहयोगी : टोपेश चन्द्रा।

श्यामसुंदर तिवारी

डॉ. मनीष बुधिया (आर्थो.) केन्द्रीय वि.वि. के स्टूडेंट्स के साथ मेडिकल चेकअप दवा वितरण की सेवा करते हुए।

––0––